अनन्त दर्शन

हुज़ूर महाराज दर्शन दास जी

के अनमोल वचनों का संग्रह

"धन दर्शन"

नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत दा भला ।।

अनन्त दर्शन

हुजूर महाराज दर्शन दास जी
के अनमोल वचनों का संग्रह

प्रकाशक एवं वितरण

सचखण्ड नानक धाम (रजि०)

लौनी रोड, ज़िला गाज़ियाबाद (उ०प्र०)

पत्र व्यवहार

दर्शन दरबार

ई-ब्लाक जे०जे० कालोनी, केशोपुर डिपो रोड

ख्याला, नई दिल्ली-18

सर्वाधिकार सुरक्षित

अरजोई निराधार

नानक नाम चढ़दी कला – तेरे भाणे सरबत्त दा भला।
नानक नाम चढ़दी कला – तेरे भाणे सरबत्त दा भला।
नानक नाम चढ़दी कला – तेरे भाणे सरबत्त दा भला।
नानक नाम चढ़दी कला – तेरे भाणे सरबत्त दा भला।
नानक नाम चढ़दी कला – तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

हे दाता,

पहली उपमा तेरी दाता,
दूजी तेरी खुदाई।
तीजी तेरी ओट आसरा,
चौथी रहनुमाई।
पंच घरों सो तेरा माण,
पंचम सांझ जगाई।
मैं नीच तेरे दास को दासा,
धन नानक सब तेरी वडियाई।

नानक नाम चढ़दी कला – तेरे भाणे सरबत्त दा भला।
नानक नाम चढ़दी कला – तेरे भाणे सरबत्त दा भला।
नानक नाम चढ़दी कला – तेरे भाणे सरबत्त दा भला।
नानक नाम चढ़दी कला – तेरे भाणे सरबत्त दा भला।
नानक नाम चढ़दी कला – तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

प्रस्तावना

"ईश्वर जब बंदे पर मेहरबान होता है तो उसके हाथ में अपनी कलम दे देता है और कहता है कि तुम जो लिख दोगे मैं स्वीकार कर लूंगा।"

[इसी पुस्तक से]

हुज़ूर महाराज दर्शन दास जी का नाम आज किसी के लिए भी अनजाना नहीं है बल्कि विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँच चुका है या पहुँच रहा है। उपरोक्त पंक्तियां स्वयं महाराज जी पर चरित्रार्थ होती हैं। आज उनके द्वारा कहा गया एक-एक शब्द हमारे लिए पथ-प्रदर्शक का काम कर रहा है। इसी पुस्तक में महाराज जी ने कहा है:—

"कभी-कभी की गई तकरीरें भी तकसीरें बन जाती हैं जो इंसान का ईमान बन कर रह जाती है।" धन्य है मेरा मुर्शिद, धन्य है वह महान विभूति जिसने जो कहा वह केवल दूसरों के लिए नहीं बल्कि स्वयं अपने ऊपर घटित कर, स्वयं अपने कथनों को साकार रूप देकर हमें दिखाया कि मन, वचन और कर्म की साधना किस प्रकार की जा सकती है। निर्धनता के स्तर से उठ कर विश्व के मानस पटल पर छा जाना केवल आप ही के वश की बात थी।

दास के पास वह शब्द नहीं, वह भावना नहीं कि आपके चरित्र का, आदर्शों का बखान कर सके परन्तु एक निवेदन है पाठक वर्ग से कि इस संस्करण को मात्र पुस्तक न समझ कर, महाराज जी के वचनों को प्रायोगिक रूप देकर उनके अनुसार अपना जीवन ढ़ालें और मिशन की उन्नति में सहयोग दें। शायद यही हमारी भारत के उस महान सपूत के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी जो अपने उस कथन को कि "मरने वाले की शान है मारने वाले की नहीं," सच करने हेतु धर्म व देश की खातिर प्राणाहुति दे गया।

हुज़ूर महाराज दर्शन दास जी के नवम्बर 1987 में देहावसान के बाद जैसे मिशन पर विपत्तियों का पहाड़ ही टूट पड़ा। परन्तु महारानी पाली दर्शन दास जी ने हुज़ूर महाराज की इच्छा को सर्वोपरि मानते हुए तमाम विपत्तियों को अपने ऊपर झेलते हुए उस समय मिशन की बागडोर सम्भाली जब हुज़ूर के लगाए इस पौधे पर पतझड़ के बादल मंडरा रहे थे। हालांकि विभाजन से हुज़ूर के सपनों को बहुत बड़ा धक्का लगा परन्तु कहा जाता है कि बादल चाहे कुछ देर के लिए सूरज को ढक लें परन्तु इससे यह हरगिज़ नहीं समझना चाहिए कि सूरज छुप गया है। उसी प्रकार हुज़ूर महारानी पाली दर्शन दास जी के नेतृत्व में मिशन फल-फूल रहा है। हुज़ूर महाराज जी का वह आदेश जिसमें आपने मिशन का प्रमुख व संरक्षक महारानी जी को नियुक्त किया है अनेक बार छप चुका है परन्तु हुज़ूर महाराज जी का वह आदेश मूल स्वरूप में साध-संगत की जानकारी हेतू हम इस पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर छाप रहे हैं और साध-संगत से आग्रह करते हैं कि हुज़ूर के सपनों को साकार करने के लिए अपना सहयोग दें।

निवेदक

सचखण्ड नानक धाम

ख्याला

सच की मौत मरना दुनियां में शोभा है, परन्तु झूठ की मौत मरना एक कोढ़ है जो जीव अपने हाथों अपने परिवार और संतान पर डाल लेता है।

★★★★

सचखण्ड नानक धाम हमारी रियासत (राज्य) है और आत्मा व परमात्मा हमारी सियासत (राजनीति) है।

★★★★

हम आपसे साथ नहीं मांगते, हम तो साथ देना चाहते हैं। जब आपका कोई न होगा तब भी हम आपको सहारा देंगे।

★★★★

प्रीतम के बिछोह का दुख किसी भी सांसारिक वस्तु को छोड़ने के दुख से अधिक होता है।

★★★★

यदि तुम सिदक, संतोष व ईश्वर की रज़ा अपने साथ जोड़ लोगे तो अच्छे बुरे कर्मों की खोज समाप्त हो जाएगी।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "यदि तुम जन्म संवार लोगे तो वह तुम्हारा जग है, यदि मृत्यु संवार लोगे तो वह रब है।"

★★★★

जैसे जेल में बैठा मुजरिम व अस्पताल में बैठा मरीज़ देखता रहता है कि कब बाहर जाऊंगा उसी प्रकार हमारी आत्मा अपने असली घर सचखण्ड जाने को तरसती है।

★★★★

जैसे डाक्टरी की किताबों में दवाई नहीं बल्कि दवा का नाम होता है उसी प्रकार धार्मिक ग्रंथों में ईश्वर नहीं बल्कि उसकी स्तुति व उससे मिलने का रास्ता है।

कई पैसे वाले धनी या अधिक पढ़े लिखे अहंकारी लोग कहते हैं कि ईश्वर है ही नहीं। हम कहते हैं कि ईश्वर तो है परन्तु वे ईश्वर के योग्य नहीं हुए। उन्हे तो असल में अपनी ज़िंदगी की भी समझ नहीं है ईश्वर तो दूर रहा।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "जो जीव मेरी दी हुई हर वस्तु को शुक्र करके या प्रसाद समझ कर कबूल करेगा उसे मैं भी कबूल कर लूँगा।"

★★★★

मेरा ईश्वर मेहरबान व निगाहवान है जो हमारे अवगुणों व गुनाहों को न जतलाते हुए हमें अपनी गोद में लेकर दुनियां के यश-मान दिलवाता है।

★★★★

अपनी खतांओ को बार-बार कोसने से वेहतर यह है कि उन्हें बिसार कर आगे अपने जीवन में नई व पवित्र चीज़ प्राप्त करने के लिए अपना जुनून, ज़मीर व जिसम किसी पूर्ण पुरुष के हवाले कर दो। फिर वह तुम्हारी सब ज़ंजीरों का फंदा तोड़ देगा।

★★★★

मेरा ईश्वर कहता है, "जब तुम झूठ को पूर्ण रूप से त्यागने को तैयार हो जाओगे तो मैं तुम्हें सच्चा रास्ता व सच बोलने की हिम्मत दे दूँगा।"

★★★★

मेरा दाता कहता है, "तुम देने को तैयार हो जाओ मैं तुम्हारे सारे गुनाह ले लूँगा, गुण नहीं। तुम लेने को तैयार हो जाओ मैं सारी दुनियां के गुण व खज़ाने तुम्हारी झोली में डाल दूँगा।"

★★★★

मेरा दाता कहता है, "ऐ जीवो ! तुम अपने बनाए हुए ईश्वर के घरों, मंदिर मस्जिद, गुरुद्वारों की सफाई क्या करोगे—पहले अपने घरों (शरीर) की सफाई करो अर्थात् इसमें से झूठ-कपट, फरेब का कूड़ा निकालो।"

जो कहर करते हैं वह कायर होते हैं और जो बचाते हैं वे शूरवीर कहलाने के हकदार हैं।

★★★★

ईश्वर को अपने भक्तों की तलाश होती है भक्ति करने वालों की नहीं।

★★★★

मेरा दाता कहता हैं, "जब तुम मेरे बंदों से प्यार करने लग जाओगे तो तुम्हारा हर क्षण मेरे घर में बंदगी बनता जाएगा।"

★★★★

संत सदैव जीवों के आत्मा स्वरूप दीये जलाने आते हैं न कि बुझाने।

★★★★

मेरा ईश्वर कहता है, "जब तुम पूर्ण तौर से मेरे साथ जुड़ जाओगे तो मैं तुम्हारी हर आने वाली समस्या को हल करके तुम्हारी झोली खुशियों से भर दूंगा।"

★★★★

मेरा दाता कहता है, "जब मुझे किसी को अपनी सच्ची याद देनी होती है तो मैं उसे सांसारिक दुख व दूरियां दे देता हूं।"

★★★★

ईश्वर जब बंदे पर मेहरबान होता है तो उसके हाथ में अपनी कलम दे देता है और कहता है कि तुम जो लिख दोगे मैं स्वीकार कर लूँगा।

★★★★

मेरा दाता जब अपने भक्तों पर दया करता है तो उनमें प्रेम की भावना भरता है तलवार की नहीं।

★★★★

दुख और सुख जीव को ईश्वर नहीं देता, वह तो केवल जन्म देता है। दुख-सुख तो जीव को उसके कर्मों के अनुसार मिलते हैं।

नामलेवा जीव की अध्यात्मिक अवस्था उसकी भावना इरादे व नाम कमाई पर निर्भर करती है।

★★★★

जीव को संतों के ईश्वरीय वचनों का केवल रस पान ही नहीं करना चाहिए बल्कि उन्हें ग्रहण कर अपने आपको उनके अनुसार ढालना चाहिए।

★★★★

कठिन रास्ता तब कटता है जब इन्सान को स्वयं पर भरोसा हो जाए।

★★★★

माँ पुत्र को जन्म देती है, चोर ठग को नहीं। चोरी ठगी उसे सोहबत से मिलती है।

★★★★

ईश्वर अपने दासों पर तब मेहरबान होता है जब उसके (ईश्वर) दिए हुए दुख-सुख कबूल करके वह उसके साथ सहमत हो जाते हैं।

★★★★

मायां पर बैठा साँप अंधा तो हो जाता है परन्तु ज़हर नहीं छोड़ता।

★★★★

प्रत्येक माँ बच्चे को जन्म देकर पोषण तो कर सकती है परन्तु मर्यादा कोई-कोई ही दे सकती है।

★★★★

कलम के लेखक व कलाम के पुजारो को ईश्वर इलहाम देता ही रहता है।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "माथे का तिलक मेरी निशानी है, इसमें वह शांति है जिस पर मैं सदैव मेहरबान हूं।"

हे दाता ! मुझे वह रास्ता देना जो तेरे घर की ओर जाता हो, वह नहीं जो तुमसे दूर ले जाए।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "तुम अपना कीमती वक्त मेरे प्रियजनों के साथ गुज़ारो मैं तुम्हें दुनियां की सब नियामतें बिना तरसाए ही दे दूँगा।"

★★★★

जिस व्यक्ति के विचार मैले हैं, बुद्धि मैली है वह कभी भी किसी का भला नहीं कर सकता और न ही किसी का साथ ही दे सकता है।

★★★★

दास धर्म दुनियां की वह स्तह है जिस पर प्रत्येक जीव को गुनाह बख्शवाने का खुला अवसर दिया जाता है, करने का नहीं।

★★★★

सच का कोई सवाल नहीं,
झूठ का कोई जवाब नहीं।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "तुम अपनी बुरी राहों को त्याग दो अन्यथा बुझ जाओगे। यदि तुम मेरे दीये हो तो मैं तुम्हारा दाता हूं। मुझे याद रखोगे तो जल उठोगे और वह लौ दुनियां के लिए होगी, तुम्हें लौ मैं दूँगा।"

★★★★

मेरा दाता कहता हैं, "मैं तुम लोगों से अपनी इज़्ज़त-मान, पूजा-पाठ, पैसा या अपनी भक्ति नहीं चाहता। मैं केवल सच्चा प्यार चाहता हूँ जो कि मेरी वफादारी का हो।"

★★★★

मेरा ईश्वर कहता है, "तुम्हारे मुझ पर बहुत अधिकार हैं परन्तु मेरा तुम पर केवल एक ही अधिकार है जो कि मेरी सच्ची याद, भक्ति व प्रेम से परिपूर्ण पूजा का है।"

मेरा दाता कहता है, "तुम्हारा मेरा कोई रिश्ता नहीं परन्तु मैं अवश्य ही उस रिश्ते को मान लूंगा जो तुम चाहोगे पर उसमें तुम्हें बलिदान देने पड़ेंगे।"

★★★★

झूठी प्रीत में चंद घड़ियों का सुख व चंद घड़ियों के नज़ारे हैं परन्तु सच्ची प्रीत में दुख-मुसीबतें हैं परन्तु वह इनसे सम्बंध रखते हुए भी अजर-अमर है जो कि मरणोपरांत पूजी जाती है।

★★★★

ईश्वर की शरण इतनी पवित्र है कि यदि तुम एक बार भी उसे छू लो तो तुम स्वयं भी पवित्र हो जाओगे।

★★★★

मेरा दाता कहता है. "बुरी राहों पर चलने वाले लोग मेरी कुरवत से दूर तो हो सकते हैं परन्तु नज़र से नहीं।"

★★★★

ईश्वर ने अपने और इंसान के बीच एक ऐसा पर्दा रखा है जिसे "लेखा" कहते हैं। नहीं तो यदि कहीं माँ को पता लग जाए कि उसका पुत्र बड़ा होकर नालायक निकल आएगा तो वह उसे कभो न पाले।

★★★★

ईश्वर की ओर लगने से कभी जीवन बर्बाद नहीं होता. बर्बाद करने के ठिकाने और बहुत हैं। इन राहों पर जीवन महान बनते हैं।

★★★★

नाम लेकर यदि यह सोचो कि बुरे कर्म करते जाएं तो गुरु को धक्का लगेगा तो यह तुम्हारी भूल है। यदि ईश्वर का दिया मान-यश तुम नहीं संभाल पाए तो और क्या संभालोगे ?

★★★★

लहू के रिश्ते सब दिखावा हैं पर प्यार के रिश्ते आपकी परछाई हैं। उसकी कोई कीमत नहो, तुम्हे स्वयं पर भरोसा होना चाहिए।

जो तुम सांसारिक तलाश करते हो, वह तलाश तुम्हारी नहीं बल्कि तुम्हारे दुष्ट विकारों की है।

★★★★

ईश्वर या उसके भेजे हुए रहबरों के आगे तुम्हारी अकड़ या जिद नहीं चलती। उनसे कुछ लेने के लिए उनको बच्चों की तरह मना लो, बराबरी न करो। रावण, कंस जैसे बराबरी न कर सके तुम क्या करोगे?

★★★★

जितने आपको अपने सुख प्यारे हैं उतने ही ईश्वर को अपने सिख अर्थात् भक्त प्यारे हैं।

★★★★

जहां आपकी आशा पूर्ण होती है वहां आपके सदा ही त्यौहार हैं, परन्तु जहां आशा पूर्ण नहीं वहां कुछ भी नहीं।

★★★★

ईश्वर की सच्ची याद उसकी भक्ति है और उसके समक्ष की गई प्रार्थना उसकी शक्ति है।

★★★★

यदि तुम्हारे गुनाहों पर ईश्वर ने पर्दा डाल ही दिया है तो यह न समझो कि वह तुम्हारे बुरे कर्मों से बेखबर है या भूल गया है।

★★★★

बड़े-बड़े गुनाह क्षमा किए जा सकते हैं पर गुरु के नाम पर या अपनी आत्मा से किया विश्वासघात अक्षम्य है।

★★★★

मदद हमेशा उसकी करो जिसे तुम जानते नहीं। जिसे जानते हो उसकी मदद, मदद नहीं अहसान है।

वह गुरु नहीं जिसके साथ लग कर सेवक कंचन न बने और वह सेवक नहीं जो गुरु के साथ लग कर बुरे कर्म न छोड़े और कंचन न बने।

★★★★

तुम दानी नहीं दरिंदे बनते जा रहे हो, तुम्हारी दीद कोई क्या करेगा ?

★★★★

सच्ची मुहब्बत को जो निखार कांटों की सेज पर आता है वह फूलो की सेज पर नहीं। यह ईश्वर की शोभा है या पातशाहों के सिर का ताज।

★★★★

जिसके सिर पर किसी पूर्ण पुरुष का हाथ हो जाए उसके रास्ते में आने वाले कांटे भी फूल बन जाते हैं।

★★★★

सब रोगों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) से ऊपर एक रोग है जिसे बैराग कहते हैं। यह रोग ईश्वर का है तथा उसके घर कबूल होता है परन्तु यदि पैदा हो जाए तो।

★★★★

ईश्वर के घर में तुम्हारी चतुराई नहीं बल्कि नेक कर्म और सच्चाई चलेगी।

★★★★

यदि ईश्वर से कुछ मांगना ही है तो उससे उसकी दी हुई नियामतों का प्रयोग करने की बुद्धि मांगो।

★★★★

मेरा दाता सब दासों को इज़्ज़त, मांन व आदर देता है, उसे बरकरार रखना जीव के अपने हाथ में है, दाता के नहीं।

मेरा दाता कहता है, "उस समय तुम दण्ड के भागी बन जाओगे जब तुम मेरे दिए हुए आदर और एतबार को सांसारिक मिथ्याओं में बेतुका भटकाओगे।"

★★★★

मेरा दाता बेगरज़, बेमरज़ व बेदर्द है परन्तु बेखबर नहीं। वह तुम्हारी एक-एक पल की खबर रखता हैं परन्तु जतलाता नहीं क्योंकि उसकी नीयति ही तुम्हारे गुनाहों पर पर्दा डालना है।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "जो जीव सत्य पर चलते हुए अपनी बाहरी इच्छाओं को त्याग कर दूसरों के लिए दुखों, मुसीबतों का सामना करता है मैं उसे स्वीकार कर लेता हूँ।"

★★★★

जब भी किसी इंसान को उसकी औकात से अधिक चीज़ मिल जाती है तो उसका दिमाग घूमने लग जाता है और वह गलत हो जाता है।

★★★★

माशूक चाहे बेवफा हो जाए परन्तु आशिक बेवफा नहीं होना चाहिए।

★★★★

झूठ बोलने से क्षणिक सुख तो मिल जाता है परन्तु आनन्द नहीं। सच बोलने पर पहले दुख सहन करके भी बाद में शांति व आनन्द का भास होता है।

★★★★

ईश्वर से दुखों से छुटकारा मत मांगो, बल्कि दुखों को सहने की हिम्मत मांगो यह तुम्हारे प्रारब्ध कर्मों का फल है।

★★★★

ईश्वर से कभी भी सांसारिक वस्तुओं की मांग न करो, उससे दाता की मांग करो। जब दाता घर आ जायेगा तो सांसारिक सुख-सुविधाएं स्वयं चली आएंगी।

आप बहिर्मुखी विचारों से ईश्वर के दिए गए सुख को गवां कर दुख खरीदते हो परन्तु संत आपके वह दुख काट कर फिर सुख देते हैं।

★★★★

तुम कर्म भुगतने के लिए धरती पर आते हो परन्तु संत कर्म कमाने के लिए आते हैं।

★★★★

जीव प्रारब्ध के संस्कारों के अनुसार जन्म लेता है परन्तु संत ईश्वर की इच्छा से उसकी नौकरी में धरती पर आते हैं।

★★★★

अपने अरमानों को मार कर दूसरों के अरमान पूरे करना या स्वयं भूखे रह कर दूसरों का पेट भरने में ही वास्तविक खुशी है।

★★★★

सच्ची मुहब्बत ही असली सुख है जिसका कोई मज़हब नहीं।

★★★★

जो लोग लकीर के फकीर होते हैं उनका हाल भेड़ चाल सा है शेर जैसा नहीं। यह उन लोगों की न तो तकसीर, ना तकदीर और न ही तदबीर कही जा सकती है। यह केवल उनकी बेसमझी या भोलापन है कि वह अपने जीवन को ऊँचा बनाने के लिए अपना रास्ता आप नहीं ढूंढते।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "यदि तुम अपनी राह स्वयं तलाश करोगे तो मैं तुम्हारी हर राह पर एक नेक साथी, हमराही या हमराज़ बन कर मदद करुँगा।"

★★★★

मेरा दाता कहता है, "जब तुम सब अपने असली घर की ओर मुड़ जाओगे तो मेरे घर के दरवाज़े तुम्हारे लिए अपने आप खुल जाएंगे।"

संत ईश्वर का घर लूट कर आपका घर भरते हैं,
आप लोगों का घर लूट कर अपना घर भरते हो।

★★★★

संत आपको आबाद करते हैं बर्बाद नहीं। बर्बाद आप अपनी बुरी सोचों व राहों से होते हो।

★★★★

गुरु तुम्हारा गुण है गुनाह नहीं। गुनाह आप अपनी बाहरी भूखों व वहशीपन द्वारा करते हो।

★★★★

झूठ नजर आता हैं क्योंकि उसके पीछे बाहरी शोहरत का मकसद होता है। परन्तु सच नज़र नहीं आता क्योंकि उसके पीछे ईश्वरीय राज़ होता है।

★★★★

जो सेवक अपने अंतर से मुर्शिद का भय निकाल देते हैं, एक प्रकार से वे अपनी मौत की आप तैयारी कर रहे होते हैं।

★★★★

ईश्वर आपका सवाल है, हल नहीं।

★★★★

ईश्वर रहत में है परन्तु आपके सब सांसारिक रिश्ते-नाते रिवाजों के अधीन हैं।

★★★★

ईश्वर तुम्हारे अंदर बसता है पर रहता नहीं। रहता वह केवल अपने भक्तजनों के हृदयों में है।

ईश्वरीय उपदेश व ईश्वरीय वाणी इंसान की निजी ज़िंदगी को प्रकाशमान करती है न कि ईश्वर को।

★★★★

संत-महापुरुषों का गुस्सा भी रहमत का एक ऐसा अंग है जो इंसान को पार लगाने का सीधा तरीका है। परन्तु आपका गुस्सा ना किसी को पार लगाने का, न संवारने का बल्कि स्वयं अपने आपको बर्बाद करने का सबसे खतरनाक ज़रिया है।

★★★★

जो आदमी कोई काम करने से पहले अपना रुतबा नहीं देखता वह कभी भी अपने जीवन में सफल नहीं हो सकता।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "जब तुम मेरे आगे अपने गुनाह खोल कर रख दोगे तो मैं तुम्हारी जन्मो-जन्मो की मैल धो कर रख दूंगा।"

★★★★

मेरा दाता कहता है, "मैं आपकी नींव बनना चाहता हूं, तुम इमारत बन जाओ। तुम्हारी यह नींव धर्म की होगी। तुम मेरे फूल-पत्तीं-टहनियां बन जाओ मैं वृक्ष तुम्हारा जड़ वाला हूं।"

★★★★

सचखण्ड नानक धाम के दासो ! मुझे जो ईश्वर के घर से मिला है तुम लोगों में मैंने वितरित किया है, तुम भी जो तुम्हें मिला है आगे बांटने की कोशिश करो।

★★★★

हम जिसे अपना बना लेते हैं उसे छोड़ते नहीं पर आप स्वयं टूट जाते हो।

★★★★

दास धर्म आपको आपस में जोड़ने के लिए है तोड़ने के लिए नहीं। यदि कोई भी हुकूमत, कौम या श्रेणी गलत राह अपनाएंगी तो दास धर्म उसे रोकने के लिए बलिदान देने के लिए हर समय तैयार रहेगा।

आप अगर हमारे पास आते हो तो हमसे वह चीज़ लेकर जाओ जिससे आपको हमारे पास बार-बार न आना पड़े बल्कि हम स्वयं आपके पास बार-बार आएं।

★★★★

आप लोग चाबी वाले खिलौनों की भांति हो। जब आपके अंदर किसी मज़हब कौम की चाबी भर जाती है तो आप भी उस खिलौने की भांति उछलने लगते हो।

★★★★

धर्म स्वयं आज़ाद होता है व दूसरों को आज़ादी का संदेश देता रहता है।

★★★★

दास धर्म किसी भी कौम, मज़हब या हुकूमत के नीचे काम न करते हुए वह परस्पर बंधुत्व पैदा करेगा जो हमारे आत्मिक ज़ख्मों पर मरहम का काम करेगा।

★★★★

दास धर्म न तो किसी से डरता है और न ही किसी को डराता है। यह प्रेम का पुजारी है।

★★★★

यदि आप किसी से सत्कार की अपेक्षा करते हो तो सर्वप्रथम किसी को सत्कार देकर देखो।

★★★★

संतों की पहुँच ईश्वर तक तो होती है, साधारण व्यक्ति तक नहीं।

★★★★

नानक धाम में आने वाले दासो, तुम्हारा ईश्वर एक है और धर्म भी एक है—इंसानियत।

आनन्द का वास्तविक अर्थ है सब्र व संतोष ।

★★★★

आपको किसी पाठ-पूजा या दान-पुण्य की जरुरत महसूस नहीं होगी यदि आप उस ईश्वर का भय हृदय में रख कर उसे याद रखोगे ।

★★★★

ईश्वर का आपके साथ सम्बन्ध आपकी बुद्धिमता या दुख-सुख के समय उसे याद करने से नहीं बल्कि उसका आपके साथ माँ-बाप जैसा सम्बन्ध है ।

★★★★

धर्म आपका वादा व कर्म आपकी जाति है, मज़हब कोई भी हो सकता है ।

★★★★

नानक धाम में आने वाले दासो, सब काम भूल कर किसी रूप में भी ईश्वर को याद कर लो, वह स्वयं स्वीकार कर आपके काम संवार देगा परन्तु प्रार्थना नम्र होनी चाहिए अहंकार वाली नहीं ।

★★★★

अपनी जिह्वा से किसी को बुरा भला न कहो, न सुनो और सदा मीठा बोलो यह भी ईश्वर की तलाश है ।

★★★★

झूठ बोल कर किसी बेगुनाह की ज़िंदगी बचा लेना पुण्य है परन्तु झूठ बोल कर किसी निर्दोष को बर्बाद कर देना ईश्वर के घर में बहुत बड़ा पाप है जो आपकी पुश्ते भी बख्शवा नहीं सकेंगी चाहे कितने भी पाठ-पूजा करते रहो ।

★★★★

हम अपनी रुहें ढूंढने आए हैं और उन्हें अपने नाम के साथ जोड़ कर सदा के लिए अमर करके व बाकी लोगों को ईश्वर के घर का रास्ता दिखा कर चले जायेंगे ।

प्रेम की कठिन मंजिलें, लम्बे सफर, संकट भरी राहें व आयु के सांस थोड़े हैं।

★★★★

तुम ईश्वर को व उसके दिए हुए कामों को भूल गए हो परन्तु अपने आपको नहीं भूले। जिस दिन तुम अपने आपको भूल गए उस दिन ईश्वर के दिए सब काम तुम्हें याद आ जाएंगे।

★★★★

ईश्वर तुम्हारी पाठ-पूजा के कारण तुम्हें औलाद या धन दौलत नहीं देता वह तो तुम्हें पुरातन संस्कारों के अनुसार तुम्हें जन्म के साथ ही दे देता है।

★★★★

गुरुवाणी, कुरान शरीफ, बाईबल, गीता, रामायण सब आपके ओट, आसरे व सहारे हैं। जिस दिन अमल करना शुरु कर दोगे उस दिन सिर हथेली पर रखना पड़ जाएगा जो कि तुम्हारे वश की बात नहीं।

★★★★

जिसने यह शरीर बनाया है वह कर्ता है, जिसने गिराया है वह आप स्वयं हो।

★★★★

वाल्मीकि के प्रेम सहित "मरा-मरा" कहने से ईश्वर उसके पास आ गया परन्तु अहंकार में आकर "प्रभु-प्रभु" कहने वाले रावण बन गए।

★★★★

समय-समय पर झुक जाना, समय-समय पर मुड़ जाना गुनाह नहीं गुण है।

★★★★

जब तुम्हारे हृदय में ईश्वर की सच्ची याद बस जायेगी तब वह तुम्हें अपनी गोद में ले लेगा।

ईश्वर किसी मज़हब, कौम की खातिर धरती पर नहीं आता। वह पाँच तत्व का शरीर लेकर धरती पर तब आता है जब उसके बनाए हुए इंसानों पर जुल्म या कहर होता है और सच्चाई खत्म हो जाती है।

★★★★

ईश्वर को याद करने वाले उसके पुत्र, याद न करने वाले कुपुत्र और जो उसका संदेश धरती पर आकर देते हैं वह सुपुत्र कहलाते हैं जिनको आप संत नबी या पीर-पैगम्बर भी कह सकते हो।

★★★★

ईश्वर ने एक ही धर्म बनाया है, वह है "इंसानियत" जिसके हृदय में दया सत्य, संतोष और नाम का वास है।

★★★★

संत आपको दान देते हैं परन्तु आप मन्नतें मांग-मांग कर दण्ड भरते हो।

★★★★

मेरे ईश्वर का संदेश आपके परस्पर सहयोग के लिए है, इन पर चलने वाला व मानने वाला आदमी बंधुत्व व बुद्धि का स्वामी बन जाता है। जो लोग मेरे दाता के संदेशों पर नहीं चलते, परस्पर बंधुत्व पैदा नहीं करते वे शैतान का रूप धारण कर लेते हैं।

★★★★

पूर्ण पुरुष या संत हमें सामाजिक, सांसारिक बंधनों से मुक्त करने आते हैं उनमें फँसाने नहीं।

★★★★

मेरा ईश्वर कहता है, "मुझे बिसार कर तुम कहीं भी बस नहीं सकोगे। यदि मुझे याद रखोगे तो हर जगह तुम्हारा बसेरा होगा।"

★★★★

मेरा दाता कहता है, 'हे जीव ! जब तुम दुनियां से ऊब जाओगे और शरीर से थक जाओगे तब मैं तुम्हें अपनी बाहों का सहारा दे दूंगा।"

मेरा दाता दीद का मालिक है, दुश्मनो का नहीं।
वह दयावान व दयालु है, दुष्ट व दानव नहीं।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "ऐ बंदे ! मैंने तुम्हें पाँच तत्व (हवा, मिट्टी, अग्नि, पानी, आकाश) दिए हैं जो कि मेरे मौलिक अधिकार हैं। इनमें से यदि मैं एक भी ले लूँ तो तेरी कोई कीमत नहीं रहेगी। तुम इसका अहसास करो।"

★★★★

यदि तुम सच बोलना नहीं चाहते या बोल नहीं सकते तो केवल अपने अंदर सच सुनने की ही हिम्मत ले आओ, ईश्वर तो भी तुम्हारा मददगार होगा।

★★★★

जो दुख ईश्वर स्वयं देता है, वह उन्हें काटता भी स्वयं है। परन्तु जो दुख जीव अपनी बाहरी गरज़ों या गलत राहों के कारण पैदा करता है वह उसे स्वयं भुगतने पड़ते हैं।

★★★★

इस शरीर को संवारने के लिए भक्ति की नहीं बल्कि नेक साथी की जरुरत है।

★★★★

दुनियां में रहते हुए दुनियावी जिम्मेदारियां निभाना हमारा कर्त्तव्य है धर्म नहीं, धर्म हमारा है किसी निर्धन की मदद करना और दूसरों के लिए जीना।

★★★★

जिस जीव के हृदय में नाम चलता है उनमें से क्रोध, निंदा-चुगली खत्म हो जाती है।

एक ऊंगली किसी की ओर करके यदि तुम उसे बुरा कहते हो तो तीन ऊंगलियां तुम्हारी खुद की ओर आती हैं अर्थात् आप उससे तीन गुना बुरे हो।

★★★★

तुम स्वयं किसी का सहारा बनो, स्वयं सहारा मत ढूंढो, तुम्हें सहारा ईश्वर देगा।

★★★★

ईश्वर के बंदे बदले की भावना नहीं रखते वह तो बंदगी करवाते हैं।

★★★★

तुम्हारी आत्मा शरीर स्वरुप अस्पताल में मन के विकार स्वरुप कैंसर से बीमार पड़ी है। इसकी दवा है नाम जो आपको किसी नामी पुरुष से ही मिल सकती है।

★★★★

जगत की चतुराई दुखों का कारण व वक्त गुज़ारने के लिए होती है। परन्तु ईश्वर की चतुराई हो तो जन्म महान बन जाता है।

★★★★

मुहब्बत करने वाले सांथ नहीं मांगते, वो तो एक बार साथ मिल जाने पर जान न्योछावर कर देते हैं।

★★★★

संत एक आइना (शीशा) बनकर धरती पर आते हैं, उसमें अपना चेहरा देखो। फिर तुम जो उनसे मांगोगे वह तुम्हारी भावना के अनुसार तुम्हें देते जाएंगे।

★★★★

सचखण्ड नानक धाम में आने वाले दासो ! अपने आप पर भरोसा और यकीन ले आओ ज़िंदगी में सफल हो जाओगे क्योंकि आत्म विश्वास ही उन्नति का कारण है।

तुम हर चीज़ वक्त से पहले चाहते हो परन्तु जब ले लेते हो तो तुम से संभाली नहीं जाती, फिर उसे संभालने के लिए दौड़ते-फिरते हो।

★★★★

पूर्ण पुरुष की अपने सेवक पर ईश्वरीय कृपा की असली निशानी उसके सांसारिक दुख, दरिद्र व अपने से दूरी होती है न कि सांसारिक सुख व समीप्य।

★★★★

संत हमें जगत की झूठी आशाओं से तोड़ कर सच्ची आशाओं से जोड़ते हैं।

★★★★

ईश्वर को बिसार कर आप सांसारिक सुख तो प्राप्त कर सकते हो अध्यात्मिक आनन्द नहीं।

★★★★

ईश्वर करनहार है, संत करावणहार होते हैं।

★★★★

गलती मान लेना गुण है गुनाह नहीं।

★★★★

ईश्वर को तुम्हारी भक्ति की नहीं बल्कि प्यार व सच्ची याद की जरुरत है।

★★★★

कभी-कभी की हुई तकरीरें ही तकसीरें बन जाती हैं जो कि इंसान का ईमान बन कर रह जाती हैं।

★★★★

दानिशमंद का काम देना होता है लेना नहीं।

संतों के दरबार में भावना की कद्र पड़ती है, अकल व चतुराई की नहीं।

★★★★

साधारणतय: लोग कहते हैं, "दीपक तले अंधेरा," परन्तु वह दीपक का त्याग नहीं देखते कि वह अंधेरे में रह कर भी दूसरों को प्रकाश देता है।

★★★★

आप अपनी इज़्ज़त के लिए रावण बन जाते हो परन्तु संत आपकी खातिर राम बन जाते हैं।

★★★★

यदि तुम दाता का दिया हुआ यश-मान नहीं संभाल सके तो उसकी दी हुई माया भी नहीं संभाल पाओगे। यदि मिल भी गई तो ऐबों में फंस जाओगे।

★★★★

अवसर सुनहरी वही देता है परन्तु पहचान आपको होनी चाहिए।

★★★★

पूर्ण संत आपसे अपनी पूजा करवाने नहीं आते वह तो आपको पूजा का हक दिलवाने आते हैं।

★★★★

न भक्ति करो, न पूजा करो, न पाठ करो, न दान करो, यदि कुछ करना है तो स्वयं नेक कर्मों के द्वारा नेक बन जाओ वह स्वीकार कर लेगा।

★★★★

यदि आप नानक धाम में आना चाहते हो तो अपने आत्मिक दीये जलाने के लिए आओ, जिससे स्वयं जल कर दूसरों को रोशनी दे सको।

ईश्वर दुनियां पर अपना कानून नहीं चलाता, वह केवल आपको अपने अधिकार देता है, आप यदि उन अधिकारों को नहीं प्रयोग करते तो यह आपकी बेसमझी है उसका कसूर नहीं।

★★★★

"स्वयं कमाओ-जग में वितरण करो," यह राह इंसानियत की है। "स्वयं खाओ-बाकी बचा दूसरों में वितरण करो," यह राह हैवानियत की है।

★★★★

सभी बाहरी पाखंडों को त्याग कर एक ही पाखंड धारण कर लो, वह है ईश्वर का नाम या ईश्वर की सच्ची याद।

★★★★

ईश्वर कोई कौम नहीं, कौम कोई ईश्वर नहीं।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "तुम्हारी कब्रें अलग-अलग नहीं हुई बल्कि तुम्हारे कारवां और काफिले बदल गए हैं।"

★★★★

ईश्वर आदमी पर कहर नहीं ढ़ाता अपितु कहर से बचाता है। वह कहर करना सिखाता नहीं बल्कि उससे बचने का तरीका समझाता है।

★★★★

बुरे आदमी से कभी न डरो, केवल उससे बचने का प्रयत्न करो, यदि डरना है तो स्वयं अपनी बुराइयों से डरो।

★★★★

मुहब्बत जिंदगी है मौत नहीं।

मुहब्बत कायर नहीं, आदमी कायर है।
मुहब्बत करार नहीं, करार मुहब्बत है॥

★★★★

दया व मेहर ईश्वर करता है, कृपा संत करते हैं।

★★★★

तंगदिली इंसान का ज़मीर नहीं कमज़ोरी है।

★★★★

सचखण्ड नानक धाम में आने वाले दासो ! आप वह स्तम्भ हो जिन पर दुखी लोगों के दुखों की छत पड़ेगी। इसलिए अपने आपको इतना मजबूत कर लो कि दूसरे के भले के लिए यदि तुम्हें कोई भी दुख झेलना पड़े तो हँस कर झेल सको।

★★★★

नानक धाम झुकना या झुकाना नहीं जानता, केवल दूसरों को उठाना जानता है।

★★★★

मुर्शिद सेवक के हमेशा अंग नहीं, संग रहता है।

★★★★

बदी करते समय हमेशा सोचो परन्तु नेकी करते वक्त कभी न सोचो।

★★★★

प्रजा को राजा की जरुरत होती है मंत्री की नहीं, राजा को मंत्री की जरुरत होती है प्रजा की नहीं।

★★★★

मेरा ईश्वर मेहर के घर में आकर जब अपनी दया व रहमत की जीव पर वर्षा करता है तो वह उसके सब गुनाह मूसलाधार बारिश की तरह बहा कर ले जाता है जिससे जीव का जीवन आनन्दपूर्ण हो जाता है।

मेरा दाता कहता है, "मैं तुम्हारी सच्ची याद का मालिक हूं। तुम जब भी मुझे सच्चे दिल से याद करोगे मैं वहीं तुम्हारे पास आ खड़ा हूंगा।"

★★★★

मेरा दाता कहता है, "आदमी को बुरे मार्ग पर चलने या जुल्म करने की मैं निश्चित समय तक आज्ञा देता हूं। यदि वह तौबा कर ले तो मैं उसे क्षमा करके अपनी गोद में ले लेता हूं अन्यथा मातृ-गर्भ में नौ-नौ माह उलटा लटकने का दण्ड देता हूं क्योंकि सबकी चोटी मेरे हाथ में हैं. मुझ से कोई नहीं बच सकता।"

★★★★

सच्ची प्रीत या मुहब्बत वह होती है जिसमें किसी पाप-पुण्य, सोच या दुनियां की बाहरी शरह का डर नहीं हो। परन्तु जो इन सामाजिक बंधनों के अधीन हो वह वास्तविक प्रीत या मुहब्बत नहीं बल्कि तुम्हारी जरुरत है जिसमें अपने सुखों को प्राप्त करने की तुम्हारी गरज़ या वहशियाना हवस होती है।

★★★★

ईश्वर आपकी शरण है श्रद्धा नहीं।

★★★★

जो कौम या श्रेणी दूसरे को मार कर या दबा कर राज करना चाहती है वह सदा के लिए कायम नहीं रह सकती। चिर स्थाई सत्ता केवल प्रेम की ही रह सकती है।

★★★★

इंसान को अपनी तस्वीर व तकदीर बदलने के लिए तदबीर की जरुरत पड़ती हैं।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "जब तुम समय की पहचान कर नेक संगत अपना लोगे तो मैं तुम्हारी कब्रों (अंतिम समय) को ऐसा संवार दूंगा कि तुम युग-युगांतरों तक चमकते रह सको।"

पूर्ण पुरुष सबको बराबर प्यार बांटते हैं परन्तु करते किसी भाग्यवान को ही हैं।

★★★★

आप लोग अपने स्वार्थ के लिए एक-दूसरे को प्यार करते हो परन्तु संत अपने कर्त्तव्यानुसार सबको प्यार बांटते हैं।

★★★★

तुम इंसान का बाहरी एहतराम (इज़्ज़त) करना जानते हो परन्तु आंतरिक सजदा (प्रणाम्) नहीं।

★★★★

ईश्वर तुम्हारा खौफ नहीं खुशी है।

★★★★

तुम ईश्वर से कभी न डरो, यदि डरना है तो अपने बुरे कर्मों, बुरे विचारों, बुरी सोहबत से डरो।

★★★★

आप पाठ-पूजा करते हो, वह तुम्हारी लाज रखता है।
आप कार (कार्य) करते हो, वह कृपा करता है।
आप परिश्रम करते हो, वह फल देकर मर्यादा कायम करता है।
आप दान करते हो, वह दया करता है।

★★★★

धर्म आपकी खुशी व ईमान है, आपके परस्पर विवाद या फासले नहीं।

★★★★

ईश्वर आपका हबीब है रकीब नहीं।

जिस कौम, मज़हब व हुकूमत में स्वयंसिद्धि की भावना आ गई तो समझो वह खत्म।

★★★★

ईश्वर बेपरवाह व बापरवाह है, लापरवाह नहीं। लापरवाह आदमी होता है।

★★★★

आप जीव इंद्रियों के जंजाल में फंस कर दिल से सोचते हो जिसका नतीजा कई बार गलत हो जाता है। परन्तु संत इंद्रियों से ऊपर उठ कर दिमाग़ से सोचते हैं जिस कारण उनकी प्रत्येक सोच दूरअंदेशी की स्वामिनी होती है।

★★★★

सांसारिक जीव संत शरण में जा कर अपने तन की शुद्धि निष्काम सेवा से, मन की शुद्धि भजन-सुमिरन से या उसकी सच्ची याद से व धन की शुद्धि दान-पुण्य करके कर सकता है।

★★★★

मेरा दाता अंतर्यामी है, वह बिना मांगे ही अपने दासों को समय-समय पर सब कुछ देता रहता है। परन्तु कई बार जान-बूझ कर वह सेवक की अरदास पूरी नहीं करता क्योंकि वह अरदास या तो उस सेवक के लिए लाभप्रद नहीं होती या वह उस रहमत के काबिल नहीं हुआ होता।

★★★★

सारे धर्म सच्चे हैं, सब धार्मिक ग्रंथ सच्चे हैं, परन्तु हम स्वयं सच्चे नहीं हैं क्योंकि हम अपनी-अपनी सच्चाई के पीछे लगे हुए हैं।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "जहां विचार है वहां तलवार की जरुरत नहीं होती।"

★★★★

सच का सम्बन्ध केवल आत्मा के साथ होता है, बुद्धि के साथ नहीं।

संत महात्मा जीव को संत बनाने नहीं आते, वह केवल जीव को ज़िंदगी जीने का ढंग बताने आते हैं जो कि केवल ज़िंदगी काटना ही जानता है।

★★★★

जितने आप दान-पुण्य, पाठ-पूजा करते हो उनसे तो तुम्हारे किए हुए पाप नहीं धुलते, ईश्वर को पाना तो दूर की बात है।

★★★★

वह कृपा करता है तो प्रीत जागृत होती है।

★★★★

इंसान में तुखम (अंश) पिता का, तासीर मां की व सोहबत संगति की होती है।

★★★★

दिल के रिश्ते जज़बाती हैं और दिमाग़ के रिश्ते सब्र, सिदक, संतोष व प्यार के हैं, और वह रिश्ता है आत्मा-परमात्मा का।

★★★★

जैसे पिता पुत्र को रुपैया दे देता है आगे यह पुत्र का कर्त्तव्य है कि वह उसे अच्छी ओर खर्च करे या बुरी ओर। उसी प्रकार ईश्वर आदमी को जन्म देता है, आगे यह उसका फर्ज़ है कि वह इस जन्म को नेक रास्ते पर लगाता है या बुरे रास्ते पर।

★★★★

ईश्वर व संसार दो किनारे हैं परन्तु बीच में जो पानी है वह प्रेम स्वरुप है। उसमें इतनी शक्ति है कि वह दुनियां की हर गंदगी को साफ कर देता है।

★★★★

तुम पहले स्वयं को ढूंढो फिर उसे ढूंढो।

★★★★

सचखण्ड नानक धाम में आने वाले दासो ! तुम्हें यहां ईश्वर नहीं मिलेगा। यहां तुम्हें मिलेगी ईश्वर की रज़ा को मानने की ताकत। जब यह ताकत तुम में आ गई तो फिर तुम स्वयं ही ईश्वर हो।

औलाद अल्लाह के हवाले रहे तो औलाद है नहीं तो औलाद नहीं फसाद है।

****

दाता को दी जाने वाली कमाई सुमिरन है व उसकी याद उसे चढ़ने वाला चढ़ावा।

****

सच्ची व पवित्र बुद्धि स्वयं ईश्वर के संदेश सुन कर उसे आगे देती हैं।

****

जहां आपका स्वार्थ होता है वहां आप झूठ को सच व जहां नहीं होता वहां आप सच को भी झूठ समझ कर टालने का यत्न करते हो।

****

आप पुण्य करके ईश्वर को भूल जाते हो और पाप करके ईश्वर से डरते हो।

****

पूर्ण महापुरुष ईश्वर के घर से बने बनाए आते हैं, धरती पर आकर नहीं बनते।

****

तुम लोग स्वयं पर अहंकार करते हो,
परन्तु संत ईश्वर पर मान रखते हैं।

****

ऐसे ही किसी के पीछे न लगो, जब आपका ज़मीर मान जाए तो किसी के पीछे लगो।

****

जो आपका भला व आपसे प्यार करता है उसे सजदा करना गुनाह नहीं, अहकार के आगे झुकना गुनाह है।

जब भी आपको अपने कामों से फुरसत मिले तो केवल उसे सच्चे दिल से याद कर लो और कहो कि हे दाता ! तू जिस भी शकल, जिस भी नाम में है, मेरा भला कर दे।

★★★★

जिस औरत की गोद ने मुर्शिद, महिरम, मुरीद, मुकमम्ल किए वह अपवित्र कैसे हो सकती है ? उन लोगों के कर्म नापाक हैं जो औरत को अपवित्र समझते हैं।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "जो मेरे बंदों से दोस्ती करेगा मैं उस पर सदा ही मेहरबान रहूंगा।"

★★★★

जिसके पास हक़ हलाल की कमाई नहीं संत उसे अपने रास्ते पर चलने की हिम्मत ही नहीं देते।

★★★★

मेरा दाता कहता है, "तुम्हारी आंतरिक पुकार मेरी पुकार है। मैंने तुम्हारे बाहरी शरीर न देखे हैं न देखूँगा। जब तक तुम्हारी आंतरिक प्रीत व याद कायम है मैं साथ हूं। जिस दिन यह निकल गई उस दिन मैं स्वयं ही निकल जाऊंगा, तुम्हारे कहने से नहीं।"

★★★★

जैसे मकड़ी जाल बना-बना कर बड़ा करती है फिर बाहर निकलने का रास्ता भूल कर उसी जाल में मर जाती है उसी प्रकार सांसारिक जीव है।

★★★★

बारह साल किसी संत-महापुरुष की सेवा करने के बाद एक बार भी यदि वह तुम्हारा माथा टेकना स्वीकार कर ले तो अपने को धन्य समझो।

★★★★